भारत में नगरीकरण आर्थिक विकास एवं भौगोलिक विकास का सूचक समस्याएं एवं समाधान

Mahipal Gurjar

S/O Durga Ram Gurjar
Village: Goriya Tan dhanawata,
Tehsil: Udaipurwati, District: Neem Ka Thana
Pin Code: 333307

सारांशः–

मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों में नगर सभ्यता और संस्कृति के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। भारत सहित अन्य विकासशील देशों में भी नगरीय जनसंख्या के अनुपात में नागरिक सुविधाओं (भोजन, जल, आवास, सफाई, परिवहन) में बढ़ोतरी नहीं हो पायी है जिसके कारण नगरवासियों के सामान्य जीवन स्तर में गिरावट की प्रवृत्ति पायी गई है। नगर में भीड़–भाड़, गंदगी, बीमारी, बेरोजगारी तथा अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती है जो नगरीय जीवन की श्रेष्ठता को सुरक्षित रखने में बाधक होती है। अंत नगरीकरण या नगरीय विकास के प्रायः सुख समृद्धि तथा सामाजिक–आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है। नगर विविध प्रकार के व्यवसायों (उद्योग, व्यापार, परिवहन एवं संचार सेवाएं आदि), स्वास्थ्य सेवाओं, मनोरंजन, उच्च जीवन स्तर आदि का भी केन्द्र होता है जिसके कारण वह अपने आस–पास ही नहीं बल्कि दूरवर्ती क्षेत्रों से भी मनुष्यों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। नगरीय समस्याओं का मूल कारण नगरों में आवश्यकता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण तथा नगर के अनियोजित विस्तार एंव विकास को माना जाता है। वास्तव में नगर में जनसंख्या का केन्द्रीकरण इतनी शीघ्रता और अनियंत्रित ढंग से होता है कि वहां अपेक्षित नागरिक सुविधाओं का विकास नहीं हो पाता है। जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ जन्म लेती हैं।

मूल शब्दः विकासशील देश, संकेन्द्रण, अनियोजित विस्तार मानव सभ्यता, नगरीकरण, जनसंख्या

1. **स्थानाभाव की समस्याः** विभिन्न नगरीय सुविधाओं आदि से आकर्षित होकर ग्रामीण जन बड़ी संख्या में निकटवर्ती नगर की ओर पलायन करते हैं जिससे नगर में जनसंख्या निरंतर बढ़ती जाती है जिसके रहने के लिए अधिक आवास, रोजगार, आवश्यक वस्तुओं तथा सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। नगरीय वृद्धि के साथ–साथ अधिकाधिक भूमि अतिक्रमण तथा भूमि के मूल्य में तीव्र वृद्धि जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। नगर में नये–नये उद्योग–धन्धों, दुकानों, कार्यशालाओं, आवास गृहों, पार्कों आदि के लिए भूमि की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति के लिए नगर का विस्तार बाहर की ओर ग्रामीण क्षेत्रों की ओर होता है। इस प्रकार जिस भूमि पर पहले शाक सब्जियाँ, फल–फूलों, आदि की खेती की जाती थी उन पर नगरीय अतिक्रमण के फलस्वरूप इस प्रकार के कृषि उत्पादन संभव नहीं हो पाते हैं। नगरीय

आवश्यकताओं की वृद्धि से उत्पन्न स्थानाभाव के कारण भूमि का मूल्य अत्याधिक ऊँचा हो जाता है और रहने, काम करने, दुकान तथा अन्य विविध सामाजिक–आर्थिक कार्यों के लिए भूमि प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो जाता है। मूल्य का निर्धारण सामान्यतः मांग और पूर्ति के आधार पर होता है। किसी–किसी नगर के औद्योगिक क्षेत्रों में भी स्थानाभाव के कारण भूमि मूल्य आवासीय क्षेत्रों से भी अधिक होता है।

2. **परिवहन की समस्याः** नगरीय विस्तार तथा बढ़ते नगरीकरण ने यातायात संबंधी अनेक जटिल समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। नगरों में परिवहन संबंधी समस्या के अनेक रूप हैं। सड़के नगर की सरंचना की आधार होती है जिन पर नगर का सम्पूर्ण ढांचा खड़ा होता है। अतः सड़कों की स्थिति अच्छी तथा गमनागमन योग्य होने पर ही नगरीय जीवन विकासशील और सुखमय हो सकता है। खराब सड़कों की समस्या अधिकांशतः विकासशील देशों में है जहाँ जनसंख्या के अनियंत्रित संकेन्द्रण के कारण नगर का प्रसार बाहर की ओर हो जाता है। किन्तु धनाभाव के कारण पक्की सड़कों का निर्माण नहीं हो पाता है। भारत जैसे विकासशील देशों में नगर के भीतर कितनी सड़कें ऐसी पायी जाती है जिन पर जगह–जगह गडढ़े मिलते हैं जिनसे वाहनों के टायर क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, शीघ्र घिसते हैं और फट जाते हैं। नगरों में सड़कों की खराब स्थिति का प्रमुख कारण स्थानीय निकायों के पास धनाभाव का होना तकनीकी साधनों की अपर्याप्तता, जनजागरण की कमी है। विश्व में नियोजित ढंग से बसाये नगरों की संख्या बहुत कम है जहां सड़कों को पर्याप्त चौड़ा और समयानुकुल बनाया गया है। सामान्यतः अधिकांश नगरों के आंतरिक भगा में सड़कों के संकारा होने तथा वाहनों की अधिकता से इतनी अधिक भीड़ एकत्रित हो जाती है कि कभी–कभी घंटों यातायात अवरूद्ध हो जाता है। सुरंगी मार्ग अभी भी सामान्यताः पाश्चात्य विकसित देशों– इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी आदि में ही प्रचलित हैं। नगर के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन के लिए यात्री किराया और आवश्यक वस्तुओं को पहुँचाने का माल–भाड़ा काफी अधिक होता है जिसका कारण है परिवहन के छोटे साधनों का प्रयोग।

3. **जलापूर्ति की समस्याः** मानव जीवन के लिए अनिवार्य तत्वों में वायु के पश्चात् जल का ही स्थान है और जल के अभाव में जीवन संभव नहीं है। नगर के सकेन्द्रित विशाल जनसंख्या के लिए शुद्ध पेय जल की आपूर्ति कर पाना नगर प्रशासन के लिए एक बड़े उत्तरदायित्व और कठिनाई का काम होता है। जो नगर किसी प्राकृतिक जलाशय (नदी, झील आदि) के किनारे या निकट स्थित हैं वहाँ उन स्त्रोतों के जल का ही अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। किन्तु उनसे भी जल प्राप्त करने की एक सीमा होती है। अनेक नदियों तथा झीलों का जल स्तर शुष्क ऋतु में पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो पाती है। इस प्रकार ग्रीष्म और शुष्क काल में नगरों में जलाभाव की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। विद्युत आपूर्ति में बाधा या विद्युत कटोती के कारण भी जलापूर्ति बाधित हो जाती है उत्तरी भारत के दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद आदि अनेक नगरों में कभी–कभी तो पीने भर को भी पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है तथा कई दिनों तक नल की टोटियों में पानी नहीं टपकता है। प्रचुर वर्षा वाले एशियायों में पानी नहीं टपकता है। प्रचुर वर्षा वाले एशियायी देशों में भारी जल रिसाव के कारण असंख्य जगहों पर भूमिगत जल भी प्रदूषित हो जाता है। यदि ऐसे प्रदूषित जल का प्रयोग पीने के लिए किया जाता है तब भी विभिन्न प्रकार की बीमारियों के फैलने का भय रहता है।

4. **स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्याः** जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, मलिन बस्तियों के विकास, जल एवं वायु प्रदूषण, निर्धनता एवं बेरोजगारी आदि के परिणामस्वरूप नगरों में तरह–तरह की बीमारियों के फैलने से जनस्वास्थ्य में गिरावट आती है। इसके लिए उपयुक्त चिकित्सा स्वास्थ्य का होना अनिवार्य होता है। यद्यपि विकसित देशों में चिकित्सा को उतनी समस्या नहीं है। जितनी विकासशील देशों में हैं, किन्तु स्वास्थ्य की समस्या थोड़ी बहुत सभी नगरों में पाई जाती है। भारत के नगरों में अस्पतालों की कमी है और जो अस्पताल हैं उनमें शय्याओं तथा सुविधाओं की भी कमी हैं। आजकल अनेक सरकारी चिकित्सालयों में चिकित्सा की दयनीय स्थिति, कुप्रबंध, सफाई का अभाव आदि को देखकर सामान्य जन भी प्राइवेट चिकित्सालयों में इलाज कराने का बाध्य होते हैं यद्यपि वहां उन्हें अधिक धन व्यय करना पड़ता है। इस प्रकार भारत जैसे विकासशील देशों के नगरों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या नगर प्रशासन तथा नगरवासियों के लिए गंभीर चुनौती बन गयी है।

5. **अपशिष्ट पदार्थों के विसर्जन की समस्याः** सभी नगरों में वस्तुओं के उपयोग के पश्चात् घरों से प्रतिदिन कूड़ा–करकट तथा अनेक प्रकार के ठोस अपशिष्ट पदार्थ (जैविक–अजैविक) बाहर निकाले जाते हैं जिनका सड़क पर ढेर लग जाता है। पुराने मकानों के गिराने, नालियों की खुदाई आदि से भी मलबे इक्टठा होते रहते हैं। यदि कूड़े को एकत्रित करके नगर से बाहर नहीं किया जाता तो उनके सड़कों पर बिखरने से भयंकर बिमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती है। इसके लिए सड़को पर जगह–जगह कूड़ादान की व्यवस्था करनी पड़ती ह। जनता की लापरवाही तथा अज्ञानता और नगरीय प्रशासन की उपेक्षा से अधिकांश भारतीय नगरों की सड़कों पर कूड़े के ढ़ेर दिखाई देते हैं। प्लास्टिक के थैले नालियों, सीवर पाइपों आदि में फँस जाते हैं। जिनसे जल निकास अवरूद्ध हो जाता है।

निष्कर्षः–

वास्तव में नगर में जनसंख्या का केन्द्रीकरण इतनी शीघ्रता और अनियंत्रित ढंग से होता है कि वहां अपेक्षित नागरिक सुविधाओं का विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएं जन्म लेती हैं तथा नगर में शांति, सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होने लगता है और नगर समस्या ग्रस्त बन जाता है। भारत सहित विकासशील देशों को अनेक नगरीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नगरीय समस्याओं का मूल कारण नगरों में आवश्यकता से अधिक जनसंख्या का संकेन्द्रण तथा नगरों के अनियोजित विस्तार एवं विकास को माना जाता है।

संदर्भ सूचीः–

1. Hoselitz BF. L “The Cities of India and their Problems”, AAAG,1959:49:223-231.
2. Brooks & Adam: The Law of Civilization and Decay.
3. Pacione M. ed.): Problems and Planning in Third World Cities, Croom Helm London, 1981.
4. Hacker MS. India’s Urban Problem, University of Mysore, 1965.
5. Turner, Roy (1962, ed.): India’s Urban Future, University of California, Berkeley Los Angeles
6. Bose A. Studies in India’s Urbanization, 1901-71, Institute of Economic Growth, New Delhi, 1973.
7ए Bulsara JF. Problems of Rapid Urbanization in India, Popular Prakashan, Bombay, 1964.